छोटी सी कुटिया मेरी | By Hari Sharma |

छोटी सी कुटिया मेरी,
आने में क्या है देरी,
दीनों के घर जाने की,
कन्हा आदत है तेरी।
कृपा तू कर दे भारी,
मुझपे मेरे गिर्धारी,
जनमों से हूँ मैं कान्हा,
तेरा पुजारी।

छोटी सी कुटिया मेरी,
आने में क्या है देरी।

मैंने कुटिया आज बुहारी,
बैठा देखूँ राह तुम्हारी,
नैन लगे हैं रोने,
ओ महलों में रहने वाले,
हम हैं तेरे चाहने वाले,
आजा श्याम सोलोने।
मैं सेवक तेरा
तू है मालिक मेरा
सदियों से मैं हूँ तेरे
दर का भिखारी

छोटी सी कुटिया मेरी,
आने में क्या है देरी,
दीनों के घर जाने की,
कन्हा आदत है तेरी।
कृपा तू कर दे भारी,
मुझपे मेरे गिर्धारी,
जनमों से हूँ मैं कान्हा,
तेरा पुजारी।

रूखा सूखा जो बन पाया,
मैंने मोहन आज बनाया,
आके भोग लगा जा,
लोटा भर के छाछ चढ़ा ले,
ठंडे जल से प्यास बुझा ले,
ओ सांवरिया आ जा।
ये दुपहरी जले
ठंडी छाँव तले
कुटिया में मेरी आके
लेटो मुरारी

छोटी सी कुटिया मेरी,
आने में क्या है देरी,
दीनों के घर जाने की,
कन्हा आदत है तेरी।

कृपा तू कर दे भारी,
मुझपे मेरे गिर्धारी,
जनमों से हूँ मैं कान्हा,
तेरा पुजारी।

झाड़ पोंच के खाट बिछाई,
आजा प्यारे श्याम कन्हाई,
आके टेक लगा ले,
तुमको पंखी श्याम झुलाऊँ,
हौले हौले चरण दबाऊँ,
थोड़ा सा सुस्ता ले।
हर्ष अर्जि करूँ
कबसे विनीती करूँ
सेवक को ना तरसाओ
श्याम बिहारी

छोटी सी कुटिया मेरी,
आने में क्या है देरी,
दीनों के घर जाने की,
कन्हा आदत है तेरी।
कृपा तू कर दे भारी,
मुझपे मेरे गिर्धारी,
जनमों से हूँ मैं कान्हा,
तेरा पुजारी।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9b%e0%a5%8b%e0%a4%9f%e0%a5%80-%e0%a4%b8%e0%a5%80-%e0%a4%95%e0%a5%81%e0%a4%9f%e0%a4%bf%e0%a4%af%e0%a4%be-%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%b0%e0%a5%80-by-hari-sharma/